भगवान नित्यानन्द की महिमान्वित उपस्थिति

भगवान नित्यानन्द की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सिद्धयोग महोत्सव सत्संग

१ अगस्त, २०२१

आत्मीय पाठक,

हम अगस्त के आशीर्वादों से भरे माह में आ पहुँचे हैं। इसका अर्थ है कि ऑस्ट्रेलिया के मॅलबर्न में जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ हम धीरे-धीरे वसन्त-ऋतु की ओर बढ़ रहे हैं। अगस्त का माह मेरे लिए बहुत-बहुत ख़ास है। आप जानना चाहते होंगे कि क्यों ख़ास है।

ऐसा इसलिए कि अगस्त भगवान नित्यानन्द की पुण्यतिथि का माह है जो कि समस्त सिद्धयोगियों के लिए एक अत्यन्त मंगलमय अवसर है और ऐसा अवसर भी, जो मेरे लिए विशेषरूप से अर्थपूर्ण है। भगवान नित्यानन्द—या बड़े बाबा, जैसे कि हम उन्हें प्रेम से बुलाते हैं—के साथ मुझे सदैव एक विशेष जुड़ाव की अनुभूति होती है। जब मैं बड़े बाबा के बारे सोचता हूँ तो मेरा मन अकसर अपने बचपन की एक घटना की ओर चला जाता है। मेरे माता-पिता ने मुझे यह घटना इतनी बार सुनाई है कि यह *उनकी* घटना भी हो सकती है!

वर्ष था सन् २०००। मैं पाँच वर्ष का था और गुरुदेव सिद्धपीठ के गुरुचौक में श्रीगुरुमाई के साथ एक छोटे-से कार्यक्रम में भाग ले रहा था। इसी दौरान मुझे एक मौक़ा मिला कि मैं गुरुमाई जी के गले लग सकूँ। उस समय मैं पाँच वर्ष का शर्मीला-सा, संकोची लड़का था, अतः मैं तुरन्त अन्दर ही अन्दर सिमटकर बिलकुल छुईमुई-सा हो गया और सहम गया। जिस तरह मैं गुरुमाई जी के गले लगा, उसमें यह बात बिलकुल स्पष्ट रूप से दिख रही थी—मैं ज़मीन की ओर देख रहा था, मेरे कन्धे झुके हुए थे और गुरुमाई जी को आलिंगन करते समय मेरी मुट्ठियाँ कसकर बँधी हुई थीं।

गुरुमाई जी मेरी असहजता को जान गईं। उन्होंने धीरे-से मेरी मुट्ठियों को खोला और मुझसे "बड़े बाबा जैसे हाथों" के बारे में बात करने लगीं। उन्होंने कहा कि मैं अपने हाथों को देखूँ, उन्हें फैलाऊँ और ऊपर उठाऊँ [बड़े बाबा की इस फ़ोटो की तरह]। गुरुमाई जी ने मुझे बताया कि अगर

मैं बड़े बाबा जैसे अपने हाथों को फैलाकर किसी को गले से लगाऊँगा तो जिसे भी मैं गले लगा रहा होऊँगा, उसे बड़े बाबा के दर्शन होंगे।

आज भी मैं यह बोध बनाए रखता हूँ कि जब भी मैं किसी को गले लगाऊँ, वह चाहे जो भी हो, तो यह उसके दिन को खुशनुमा बना देने के लिए काफ़ी हो सकता है या फिर हो सकता है कि यह उसके जीवन को ही बेहतर बना दे। और अपने रोज़मर्रा के जीवन में, जब भी मुझे ऐसा लगता है कि मैं अपने खोल के अन्दर सिमट रहा हूँ तो मैं अपने हाथों को देखता हूँ और तुरन्त ही मुझे बड़े बाबा के साथ अपने गहरे जुड़ाव की याद आ जाती है और मेरा संकोच ग़ायब हो जाता है।

यह घटना मेरे लिए बहुत ख़ास है जिसका मैं अकसर ज़िक्र नहीं करता। ८ अगस्त को भगवान नित्यानन्द की ६०वीं पुण्यतिथि है, अतः मैंने सोचा कि यदि इसे आपको बताने का कोई मौक़ा है तो अभी है!

विशेष रूप से साल के इस समय में, हमेशा की ही तरह बड़े बाबा की उपस्थिति की स्पष्ट अनुभूति होती है। जब मैं उनकी पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में होने वाले महोत्सव सत्संग में भाग लेता हूँ या राग यमन कल्याण में 'नित्यानन्दं ब्रह्मानन्दं' का शान्तिदायक स्वर भी सुनता हूँ तो मेरे अन्दर सुकून, शान्ति व खुशी की भावनाएँ उमड़ पड़ती हैं।

महोत्सव सत्संगों की बात करें तो . . . गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में सिद्धयोग महोत्सव सत्संग बड़ा अद्‌भुत था न? सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर लिखे अनुभवों को पढ़कर मैं प्रफुल्लित हो उठा कि आपमें से बहुतों ने उसमें भाग लेने के सुनहरे मौक़े का ख़ूब लाभ उठाया—वह भी एक बार नहीं, कई-कई बार आपने उस सत्संग में भाग लिया। इसने मुझे याद दिला दी कि जब भी मेरे माता-पिता मेरे बड़े बाबा जैसे हाथों से जुड़ी घटना को सुनाते तो कैसे वे बार-बार सत्संग का निर्माण किया करते।

अब मैं आपको दूसरे सत्संग के विषय में बताना चाहूँगा जो जल्द ही होगा। यह भगवान नित्यानन्द की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सिद्धयोग महोत्सव सत्संग है जिसका शीर्षक है : *भगवान नित्यानन्द की महिमान्वित उपस्थिति।*
[अंग्रेज़ी में यह शीर्षक है : The August Presence of Bhagavan Nityananda]

जब मुझे यह पता चला कि यह वह शीर्षक है जिसे गुरुमाई जी ने इस सत्संग के लिए दिया है—*भगवान नित्यानन्द की महिमान्वित उपस्थिति*—तो मैं उल्लसित हो उठा। जो लोग मुझे पहचानते

हैं, वे जानते हैं कि मेरा स्वभाव मज़ाकिया है—मैं हमेशा ऐसे चुटकुले सुनाता रहता हूँ जिनमें किसी शब्द या वाक्यांश के अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं! इस सत्संग के शीर्षक के शब्द 'महिमान्वित' के लिए अंग्रेज़ी के शीर्षक में शब्द है, 'August' [ऑगस्ट]। जब मैंने अंग्रेज़ी शीर्षक में 'August' [ऑगस्ट] शब्द देखा तो मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि अंग्रेज़ी में 'ऑगस्ट' शब्द के दो अर्थ हैं : यह इस माह का नाम है *और* यह एक विशेषण है जिसका प्रयोग बड़े बाबा का वर्णन करने के लिए किया जा सकता है। निश्चित ही, जिस प्रकार गुरुमाई जी ने इसका प्रयोग किया है, शीर्षक में इसका अर्थ दूसरा वाला है। इस रूप में 'ऑगस्ट' का अर्थ है, 'सुविख्यात,' 'पूजनीय,' 'पावन,' और 'श्रेष्ठ।' यह शब्द उनके लिए प्रयुक्त होता है जो महिमावान हैं, वैभवपूर्ण हैं और विलक्षण रूप से तेजस्वी हैं। निश्चित रूप से अधिकतर लोगों को भगवान नित्यानन्द का अनुभव बिलकुल ऐसा ही हुआ है। वे बड़े बाबा की भव्य और विभूतिमान उपस्थिति का तथा उनकी शोभायमान सत्ता का अनुभव करते हैं। बड़े बाबा के बारे में विचार करते ही लोगों के मन में जो आता है—और अपने हृदय में वे जो अनुभव करते हैं—वह है, बड़े बाबा की व्यापक उपस्थिति।

मुझे जो अब तक पता है, महोत्सव सत्संग में निम्न तत्त्व रहेंगे :

- नित्यानन्द आरती गाना
- श्रीगुरुमाई के साथ नामसंकीर्तन
    - नामसंकीर्तन रहेगा, 'नित्यानन्दं ब्रह्मानन्दं'।
- धारणा के साथ ध्यान

ये तत्त्व [यू. एस. ए. ईस्टर्न डेलाइट टाइम के अनुसार] शनिवार, ७ अगस्त की शाम से सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर एक-साथ प्रकाशित किए जाएँगे और वे अगस्त माह के अन्त तक उपलब्ध रहेंगे। आप चाहें तो एक समय में केवल एक तत्त्व में भी भाग ले सकते हैं या सभी तत्त्वों में एक-साथ क्रमानुसार भी भाग ले सकते हैं। और स्मरण रखें : सत्संग में आप जब चाहें तब और जितनी बार चाहें उतनी बार भाग ले सकते हैं।

आरम्भ में, मैंने उल्लेख किया है कि जब मैं छोटा था तब गुरुमाई जी ने मुझे क्या बताया था : यह कि जब मैं अपने 'बड़े बाबा जैसे हाथों' को फैलाकर किसी को गले लगाऊँगा तो उस व्यक्ति को बड़े बाबा के दर्शन होंगे।

तब मुझे यह नहीं पता था कि २१ साल बाद मैं इतने प्रत्यक्ष रूप में श्रीगुरुमाई के शब्दों में निहित सत्य की अनुभूति करूँगा—आपको मेरे परमप्रिय भगवान नित्यानन्द के सम्मान में महोत्सव सत्संग का आमन्त्रण भेजकर। वे भगवान नित्यानन्द, जिनके खुले हाथों की इस सहज मुद्रा ने मेरा उत्थान किया है, मेरे जीवन को रूपान्तरित किया है और मुझे एक अधिक प्रेमल व्यक्ति बनाया है।

इस उत्कृष्ट महोत्सव सत्संग के हर पहलू के प्रति खुलापन बनाए रखें। मैं आपको पहले से ही वहाँ देख रहा हूँ, प्रत्येक क्षण का रसास्वादन करते हुए, उसे अंगीकार करते हुए।

आदर सहित

राम डेविज़
सिद्धयोग संगीतकार

एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, पोस्ट ऑफ़िस बॉक्स ६००, साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क १२७७९-०६००, यू. एस. ए

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।
सिद्धयोग®